

स्वच्छ वायु के लिये कार्पूल

संदर्भ

भारत में वायु प्रदूषण से प्रतिवर्ष कम से कम 10 लाख मौतें होती हैं। इनमें से केवल दिल्ली में ही वायु प्रदूषण से प्रतिवर्ष 30,000 लोगों की मृत्यु हो जाती है। वायु प्रदूषण के मुख्य कारणों में सड़कों पर बढ़ता ट्रैफिक और फैक्ट्री से निकलने वाले प्रदूषक तथा फसल एवं कचरे का जलना इत्यादि शामिल होते हैं।

प्रमुख बदि

- ध्यातव्य है कि वर्ष 2016 के अंत में दिल्ली सरकार सरकार ने वायु प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिये कई उपाय किये (जैसे - 10 दिनों तक तापीय संयंत्रों को बंद रखा गया तथा अस्थायी रूप से होने वाले निर्माण कार्यों पर रोक लगा दी गई)। परन्तु, इन सबके बावजूद भी वायु प्रदूषण में नरितर वृद्धि दिर्ज़ की गई।
- वदिति हो कि ये सभी उपाय अस्थायी थे, जनिका उद्देश्य उन दिनों शहर में प्रतिदिन के वायु प्रदूषण से निपटना था।
- वर्ष 2016 के प्रथम छह माह के दौरान दिल्ली सरकार द्वारा लागू की गई सम-वषिम योजना (वाहनों के प्रयोग के संबंध में) अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी कदम के रूप में वृष्टगित हुई। हालाँकि, इस पहल के बावजूद भी सम-वषिम योजना के पहले व दूसरे चरण में शहर का सामान्य वायु प्रदूषण (PM 2.5) क्रमशः 15% एवं 23% रहा।
- इस प्रकार वायु प्रदूषण को समाप्त करने की मौजूदा नीतियों के संबंध में कुछ चिंताएँ उभर कर सामने आईं। स्पष्ट है कि सरकार को वायु प्रदूषण की समस्या को दूर करने के लिये गंभीरता से वचिर करने की आवश्यकता है।

हॉट लेन (HOT lanes) का निर्माण

- इसका तात्पर्य यह है कि एक से अधिक व्यक्तिको ले जाने वाली कार के लिये चुनिंदा सड़कों और राजमार्गों में एक या अधिक लेन को संरक्षित करना।
- शेष लेनों में एक व्यक्तिको ले जाने वाले वाहनों प्रतिबंधित होंगे, जिसके कारण हॉट लेनों में अन्य लेनों की तुलना में वाहनों की गति तीव्र होगी (इनमें गति की सीमा में भी छूट प्रदान की जाएगी)।
- यद्यपि इस वचिर की शुरुआत अमेरिका में वर्ष 1969 में हुई थी, तथापि चीन और इंडोनेशिया जैसे देशों में आज भी इसका प्रभावी क्रियान्वयन कया जाता है।
- इस वचिर की सफलता का अंदाज़ा अमेरिका की 2005 की रिपोर्ट से लगाया जा सकता है। इस रिपोर्ट में यह खुलासा कया गया था कि सुबह 9.30 से शाम 6.30 के मध्य लोगों को बैठाने की उच्च क्षमता वाले (hov3+) वाहनों युक्त दो लेनों की सुवधा के कारण 31,700 लोगों ने 8,600 वाहनों (प्रति वाहन 3.7 व्यक्तिको) में यात्रा की। जबकि चार सामान्य उद्देश्य के लेनों में 23,500 लोगों ने 21,300 वाहनों (प्रति वाहन 1.1 व्यक्तिको) में यात्रा की।
- इसके अतिरिक्त hov लेनों में लगने वाला यात्रा का कुल समय 29 मिनट था, जबकि सामान्य उद्देश्य के लेन में लगने वाला समय 64 मिनट था।

भारतीय परदृश्य

- हालाँकि भारत में इस वचिर के अनुपालन की अभी कल्पना भी नहीं की जा रही है।
- इसमें एक बड़ा सांस्कृतिक मुद्दा भी शामिल है। भारत में नीतियों के क्रियान्वयन की मंद गतिको देखते हुए हॉट और hov लेनों का क्रियान्वयन एक दीर्घावधिक वचिर प्रतीत होता है।
- जैसा ही हम सभी जानते हैं कि हॉट लेन के प्रभावी क्रियान्वयन से ड्राइवगि में एक अनुशासति संस्कृतिका विकास होगा। अतः इसके क्रियान्वयन के लिये उचित वचिर-वमिर्श की आवश्यकता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण बदि

- इस योजना का अनुपालन करने से पूरव एवं दौरान नमिनलखिति बनिदुओं पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है-

- इसे दिन के कनि घंटों में लागू कया जाना चाहयि।
- लाभ प्रापत के लिये न्यूनतम कतिने यात्रयिों की आवश्यकता होगी।
- हॉट लेन चालाक नमिन सड़क टोल का भुगतान करेंगे अथवा उन्हें इससे पूरी तरह छूट प्रापत होगी।
- यदि हॉट लेनों का उल्लंघन करने वालों पर कुल शुल्क आरोपति कया जाए तथा नीतियों को कठोरता से लागू कया जाए तो यात्रयिों को कार्पूलगि के लिये प्रोत्साहति कर वायु प्रदूषण को कम कया जा सकता है।

- भारत जैसे देश में जहाँ सभी कारें औसत रूप से तीन से चार यात्रियों को ले जाती हैं, वहाँ ऐसी हॉट और hov परियोजनाओं को लागू करने की प्राथमिकता दी जानी चाहिये जो तीन से अधिक यात्रियों को ले जाने में सक्षम हो।
- इन लेनों को पूरणतः शुल्क मुक्त करने से उन पर लगने वाला टोल अन्य लेनों के मुकाबले अपेक्षाकृत कम होगा।
- कार में बैठने वालों की संख्या के आधार पर भन्नि-भन्नि टोल प्रणाली और वाहनों के प्रदूषण की आधुनिक जाँच इस समय भारत की आवश्यकता है।
- दिल्ली जैसे कई महानगरों में चालाकों को अपने साथ एक वैद्य प्रदूषण नयित्रण प्रमाणपत्र ले के चलना चाहिये जो कि भारत स्टेज के मानदंडों पर आधारित होना चाहिये। ध्यातव्य है कि भारत स्टेज मानदंड यूरोपीय नयिमकों पर आधारित हैं।

नषिकरष

स्पष्ट है कि सरकार को वायु प्रदूषण को कम करने के इस वकिल्प को संज्ज्ञान में लेना चाहिये और कम प्रदूषणकारी व अधिक यात्री वहन क्षमता वाले वाहनों के लिये भन्नि-भन्नि टोल का नरिधारण करना चाहिये। इसके अतरिकित इलेक्ट्रिक कारों और बैटरी चालित वाहनों को टोल से पूरणतः मुक्त कया जाना चाहिये। इसका कारण यह है कि यह प्रक्रया न केवल लोगों को नरिनतर अपने वाहनों के प्रदूषण की जाँच करने के लिये प्रोत्साहित करेगी बल्कि वायु प्रदूषण की समस्या का समाधान भी उपलब्ध कम कराएगी।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/carpool-for-cleaner-air>

